एक परिन्दा उड़ गया
पिंजरे में था बन्द
मंगल उत्सव हो रहा
मेरे मन आनन्द

इदं न मम

सत्यप्रकाश उप्पल
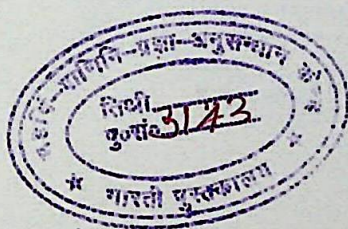
इदं न मम
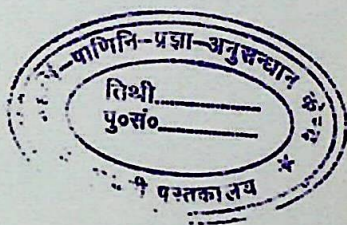
इदं न मम

वेदमन्त्र–काव्यानुवाद एवं दोहे

सत्यप्रकाश उप्पल

देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट
8, जवाहर नगर, मोगा (पंजाब)

'Idnmm'

by

Satya Prakash Uppal

367-A, Rajinder Estate,
Moga-142001
Tel. 01636-228718, 98764-28718

Published by

Devi Dass Kewal Krishan Charitable Trust

8, Jawahar Nagar,
Moga-142001
Tel. 01636-222507, 98550-41939

पहली बार : 2010

प्रकाशक : देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट, मोगा पंजाब

मूल्य : बिक्री हेतु नहीं

परम पिता परमात्मा और वेद माता के प्रति श्रद्धावनत मै उन समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ कि जिनकी उंगली पकड़ कर मै यहां तक पहुँचा हूँ।

श्रद्धेय श्रीमती इन्दु पुरी (पू० चाची जी) के प्रति सदैव आभारी हूँ जिन्होंने सदैव मुझे अपनी ममता के सुरक्षा कवच में रखा।

देवी दास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टीज़ का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे श्रम को प्रकाशित करके महिमा मण्डित किया।

अभारी हूँ आप सब का जिनके कर कमलों का स्पर्श पाकर 'इदं न मम' का परिश्रम सार्थक हुआ।

ॐ

सत्यप्रकाश उप्पल

'इदं न मम'... यह वैदिक नैसर्गिक प्रेरणा है। जीवन जीने का मूल-मन्त्र एवं सूत्र है। इसे स्मरण रखते हुए यज्ञीय आदर्शों के अनुरूप जीवन जिया जाय। जिस प्रकार मेवा, मिष्ठान्न, धृत, औषधि आदि बहुमूल्य एवं आवश्यक वस्तुओं को वायु शुद्धि के लिए बिखेर दिया जाता है, उसी प्रकार भोगोपरान्त मानव वैभव की समस्त विभूतियों को 'इदं न मम' की भावना से विश्व मंगल के लिए विखेरते रहना चाहिए - यही तात्विक यज्ञ है।

पुस्तक का आद्योपान्त पाठ कर आत्म-तोष हुआ। जिसमें स्वतंत्र शैली अपना कर गद्यात्मक एवं पद्यात्मक उभय विधा से वेद के पवित्र मन्त्रों की अत्यन्त सहज सरल बोधगम्य काव्य-रचना कर रचनाकार ने मनुष्य मात्र के लिए बड़ा उपकार किया है। पाठक, मन्त्र के साथ-साथ कविता छन्द में उसके अर्थ भी पढ़कर आत्म विभोर होंगे। विभिन्न छन्दों से सुसज्जित वेदगान से आप अनुभव करेंगे कि जैसे आप आनन्दरस की गंगा में स्नान कर रहे हैं। संग्रहीत दोहों में आध्यात्मिक चिंतन प्रशंसनीय है। निश्चित रूप से यह पाठकों के लिए रूचिकर रहेगा।

श्री 'उप्पल' जी द्वारा प्रस्तुत पुस्तक के वेद मन्त्र, भक्तिगान में ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना एवं शिक्षाप्रद, प्रेरणाप्रद, पारिवारिक तथा वैयक्तिक प्रेरणा से पूर्ण है। प्रभु के पवित्र मन्त्र श्री सत्यप्रकाश जी उप्पल की सक्षम लेखनी से काव्य रूप में निःसृत होकर समस्त जनों का समुचित मार्ग दर्शन करेंगे, ऐसी आशा है। एतदर्थ साधुवाद एवं शुभ कामनाएं!

पं दिवाकर भारती आर्य

विद्यावाचस्पति, वैदिक उपदेशक-आर्य समाज
2 न्यू टाऊन, मोगा (पंजाब)

पुण्यात्मा श्री के. के. पुरी जी की पावन स्मृति में

'इदं न मम' में उन भावों की अभिव्यक्ति हुई है जो व्यक्ति को शाश्वतता एवं सत्यता की मनःस्थिति में प्रवेश करवा कर उस चिरन्तनता और आनन्दानुभूति का स्पर्श कराते है, जिसके लिए आत्मा युगों-युगों से अनन्त यांत्रा पर है।

'इदं न मम' में कवि सत्य प्रकाश उप्पल की भावाभिव्यक्ति, वाक्य-विन्यास और भाषा एवं शैली की उत्कृष्टता व सौंदर्य पहले से और भी अधिक सार्थक, समर्थ तथा अनुपम है।

महात्मा चैतन्यमुनि

महर्षिदयानन्द धाम, महादेव
वैदिक उपदेशक-आर्य समाज
पुरुनगर, नि. मण्डी (हि. प्र.)

परम धर्म की पुनर प्रस्तुति

वेद मनुष्य जाति के लिए वरदान है। वेद का सान पथ-प्रदर्शन के लिए ईश्वर ने दिया है। अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा ऋषियों के हृदय में प्रकट वाणी सृष्टि कवि की अद्भुत रचना है। इसीलिए इसे परम धर्म कहा जाता है।

इस परम धर्म की महक जब कवि हृदय तक पहॅंचती है तो बरबस मन उस पर लट्टू हो जाता है। यही बात श्री सत्यप्रकाश जी उप्पल पर लागू होती है। उन्होंने विभिन्न वेदमन्त्रों पर कवि-सरणी प्रस्तुत की है जो वड़े ही संवेदनशील हदयों को प्राप्त होती है। कवि की 'हे अथर्व के पुत्र ! तमसोमयी घोर निराशा में, महागान की सरगम गाओ' पंक्तियों ने मेरे हृदय पर अमिट छाप छोड़ी है।

वेद मन्त्रों पर काव्य बड़ा ही सुन्दर बना है। आशा है कि कवि का प्रयास सार्थक होगा।

मेरी सम्मति में वेद के लिए किया गया थोड़ा सा कार्य भी स्तुत्म है। इसके लिए कवि एवं प्रकाशक संस्था को बार-बार हार्दिक शुभ कामनाएं।

धर्मचार्य सुनील कुमार

विद्यावाचसपति (मेरठ)
देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट
जवाहर नगर, मोगा (पंजाब)

इस सम्पूर्ण अस्तित्त्व का अंश बन कर समय का साक्षी होना और उसे अभिव्यक्ति का धरातल प्रदान करना अगर सृजनात्मकता का बोधक है तो मैं "इदं न मम" का सृजनकर्त्ता होना स्वीकार करता हूँ। अन्यथा इसमें कुछ भी मेरा नहीं है। वस्तुतः इस संसार में जो कुछ भी दृश्य अथवा अदृश्य वर्तमान है, उसका आदि कारण कोई और है। लेकिन अपनी अल्पज्ञता का दम्भ हमें वात, पित्त, कफ के बाद जिस चौथे रोग अहं की पीड़ा से त्रस्त करता है, वह अत्यन्त भयानक है... और जानलेवा भी। इसलिए मैं अपने इस कथन में केवल विनम्रता का प्रदर्शन नहीं कर रहा बल्कि सचमुच दिल से कह रहा हूँ कि इस किताब में जो कुछ भी कहा गया है वह मेरा नहीं है। हाँ मेरे द्वारा आप तक पहुँचा है इसलिए अगर आप मुझे इसका श्रेय देना चाहें तो मैं आपसे विनम्र प्रार्थना करूँगा कि इसमें जो कुछ अच्छा है उसे स्वयं ग्रहण करें और शेष पाप मुझे भुगतनें दें।

इस पुस्तक में संग्रहीत जिन वेद मन्त्रों ने मुझे रोमांचित किया है, बेशक उन्हें पचाने का सामर्थ्य मुझमें नहीं था। परन्तु स्व० श्री जितेन्द्र कृष्ण पुरी की स्मृति में प्रकाशित ग्रन्थ 'वेद मंजरी' (डा० राम नाथ वेदालंकार) के माध्यम से इन मन्त्रों की काव्यात्मक व्याख्या ने मेरे कवि हृदय को आन्दोलित किया है। इस प्रेरक प्रसंग की स्मृति को बरकरार रखने के लिए मैंने बिना कुछ रद्दो बदल किये इन मन्त्रों को यथावत हिन्दी में अनुदित करने का प्रयास किया है। मैं अपने इस काव्यानुवाद से कभी भी सन्तुष्ट नहीं था। लेकिन जिन विद्वानों के उत्साहवर्धन से यह सब आपको सौंपने का साहस जुटा पाया हूँ उनमें भजन सम्राट आर्य उपदेशक पं० श्री सत्य पाल जी पथिक का नाम सर्वोपरि है। प्रातः स्मरणीय श्रद्धेय श्री केवल कृष्ण पुरी के आग्रह पर पथिक जी ने विशेष रूचि

लेकर जिन सैद्धान्तिक त्रुटियों को दूर किया उसके लिए मै उनका अत्यन्त आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त श्रद्धेय स्वामी कर्त्तव्यानन्द जी, महात्मा चैतन्य मुनि जी, पं० दिवाकर भारती जी, पं० सुनील शास्त्री जी की सक्रिय भागीदारी के लिए सदैव उनका ऋणी हूँ।

किताब के कलेवर को बड़ा करने के उद्देश्य से नहीं वल्कि सामान्य पाठक के लिए इस किताब को सरस बनाने के उद्देश्य से इसमें कुछ दोहे भी संग्रहीत किये गये है। मेरे पूज्य पिता स्व० मास्टर श्री हरवंस लाल जी "भूषण" को ये दोहे अत्यन्त प्रिय थे। प्रातः कालीन वेला में उन्होंने कई बार मुझसे इन दोहों का पाठ सुना। सकंठ पाठ करते हुए जब मै आत्म विस्मृति की अवस्था में होता था, तो वह आनन्द विभोर हो जाते थे। स्व० श्री विजय निर्वाध जी ने पंजाब केसरी, हिन्द समाचार और जगवाणी के सम्पादकीय पृष्ठ पर इन दोहों को अपने कालम में जगह दे कर जो प्रतिष्ठा दी उसके लिए मै उनका ऋणी हूँ। वीर प्रताप तथा अन्यान्य प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं ने इन दोहों को अपने यहाँ स्थान दिया। मै कृतज्ञ हूँ। इस लिए मै सोचता हूँ कि अब इन दोहों को संकलित करना बहुत जरूरी हो गया है।

कुछ भी बढ़ा चढ़ा कर कहना अथवा चुप रहना, दोनों ही मेरी दृष्टि में उपयुक्त नहीं। इसलिए इस पुस्तक के विषय में जो और जितना कहना ज़रूरी था सो कह दिया। अब यह किताब आपके हाथों में है। मेरे इस पुनर्कथन को अन्यथा मत लें, मैं फिर से कहना चाहूँगा कि ऋषियों मुनियों की यह विरासत - मनुष्य मात्र के लिए है। इस पर न कभी किसी का पहले अधिकार था, न है और न होगा। लेकिन इतना ज़रूर तय है कि यह हम सब के लिए है और कि हम सव ऋषियों के उपकारों से लाभान्वित हों। मै अनन्त शुभ कामनाओं के साथ आपको शब्द-मन्थन के लिए आमंत्रित करता हूँ। इसमें से जो कुछ भी प्राप्त हो उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करें। ''इदं न मम'' को अपना ओढ़ना-बिछौना बना कर यह जीवन सार्थक करें। हमारा प्रयास और हमारा पुरूषार्थ सफल हो, इन्ही मंगल कामनाओं के साथ...

सत्यप्रकाश उप्पल

सविनय निवेदन

वेदमन्त्र - काव्यानुवाद

इन्द्र मृळ मह्यं जीवातुमिच्छ,
चोदय धियमयसो न धाराम्।
यत्किंचाहं त्वायुरिदं वदामि,
तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्।।

—ऋग्वेद

हे इन्द्र हमें सुखकारी हों
इस जीवन की सब इच्छाएँ
फिर लौह खड्ग की धार बनें
मम बुद्धि की सब क्षमताएँ
तव चरण—शरण का अनुरागी
यह विनय प्रभो स्वीकार करो
और देववन्त सा दिव्य बना
मुझ पर प्रभुवर उपकार करो

इन्द्र क्रतुं न आभर, पिता पुत्रेभ्यो यथा
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि
जीवा ज्योतिरशीमहि।।

—ऋग्वेद

हे परमात्मन
पिता पुत्र को जैसे देवें
ज्ञान युक्त कर्मों का प्रभुवर वर देना

हे बहुस्तुत ईश्वर
इस जीवन पथ में शिक्षित करके
जीवित जागृत पथ आलोकित कर देना

३

कारूरहं ततो भिषग्, उपलप्रक्षिणी नना ।

नानाधियो वसूयवो, अनु गा इव तस्थिम,

इन्द्रायेन्दो परिस्रव ।।

—ऋग्वेद

मैं शिल्पी हूँ, गीतकार हूँ,
पिता—पुत्र हैं वैद्य चिकित्सक
माता पुत्री हैं अन्न भूनती
चक्की में जो अन्न पीसतीं
धन के इच्छुक हम
भिन्न—भिन्न कर्मों में रत हैं
भिन्न—भिन्न स्थानों पर जैसे
गऊएं स्थित हैं
सोम प्रभु प्रवाहित होवें
अमृत पुत्रों की आत्मा में।

निखातं चिद् यः पुरूसंभृतं वसु,
उदिद् वपति दाशुषे।
वज्री सुशिप्रो हर्यश्व इत् करद्,
इन्द्रः क्रत्वा यथा वशत्।।

—ऋग्वेद

वह गतिशील, सुमुख सुन्दर
वह हरणशील घोड़ों वाला
कर्मशील मानव को वह जो
मनवांछित है वर देता
बहुअर्जित ऐश्वर्य भोग
कर गढ़े ख़ज़ाने उद्घाटित
आत्मदान करने वालों को
ऐश्वर्यों से भर देता।

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः,
सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि।
तितिक्षन्ते अभिशस्ति जनानाम्
इन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः।।

—ऋग्वेद

वे तुम्हारी कामनाओं में निरत
सौम्यगुण सम्पन्न हैं जो मित्रवत्
भक्ति रस के सोम से अभिषुत करें
प्रीतिकारक स्तुति वचन प्रस्तुत करें

आत्मा में दिव्य गुण भरते हुए
लोक निन्दा को सहन करते हुए
हम शरण में आ गये हैं दान दे
इन्द्र अद्भुत ज्ञान और प्रज्ञान दे

अर्चत प्रार्चत, प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत, पुरं न धृष्णवर्चत।।

—ऋग्वेद

प्रिय प्रज्ञ !
तुम अर्चना करो
प्राण मन से तुम प्रभु की अर्चना करो।

वह पुरोधा शत्रुओं को है मिटा रहा
कामादि शत्रु से हमें प्रतिपल बचा रहा
पुत्र हो तुम उस पिता की अर्चना करो।
पुत्र और परिवार मिल कर अर्चना करो।।

जयेम कारे पुरूहूत कारिणो,

अभितिष्ठेम दूढ़य:

नृभिर्वृ त्रं हन्याम शूशुयाम च,

अवेरिन्द्र प्रणो धिय:

—ऋग्वेद

हम विजयी हों,
बहुस्तुत ईश्वर ! हम विजयी हो।
कर्म क्षेत्र में कर्म—पारायण
दुष्कर्मी और दुर्बुद्धि को
करें पराजित
पौरूषवानों के पौरूष से
नष्ट करें हम पाप वृत्तियाँ
ज्ञान कर्म की रक्षा करते
बढ़े चलें हम उत्तरोत्तर

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे
प्रातर्मित्रावरूणा प्रातरश्विना
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं,
प्रातः सोममुत रूद्रं हुवेम

–ऋग्वेद

प्रातःकाल उठ कर करें देवों का आह्वान
अग्रणी है जो अग्नि से प्राप्त करें गुण ज्ञान
पुनः पुकारें इन्द्र को बल का हो संचार
मित्र वरूण और अश्विनी जैसा हो व्यवहार
चाह करें ऐश्वर्य की सौभाग्य खड़ा हो द्वार
ब्राह्मणस्पतिं दें ज्ञान–धन पूषा हो आधार
आवाहन है आपको सोम रूद्र सम भाव
देव उपस्थित हों जहाँ कोई नहीं अभाव

तद्व् वै राष्ट्रमा स्रवति,
नावं भिन्नामिवोदकम्।
ब्रह्माणं यत्र हिंसन्ति,
तद्व् राष्ट्रं हन्ति दुच्छुना।।

—अथर्व॰

ब्रह्मज्ञानी पर जहाँ हिंसा हुई
फिर वहाँ विध्वंस फिर दुर्गति हुई
छिद्र वाली नाव ज्यों जलधार से
स्रवित होता राष्ट्र इस अपकार से

पूर्वापरं चरतो माययैतौ,
शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम्।
विश्वान्यो भुवना वि चष्टे,
ऋतूँरन्यो विदधज्जायसे पुनः।।

—अथर्व॰

ईश्वर की अद्‌भुत माया से
सूर्य चन्द्र रूपी शिशु दोनो भ्रमण कर रहे
पूरब से पश्चिम की ओर विचरण कर रहे

नभ के सागर में क्रीड़ारत
यह सूर्य विश्व आलोकित करता
चन्द्र रूप शिशु ऋतुओं को निर्मित करता

पुनः पुनः जन्म ले कर वे दोनों
नित्य नित्य फिर नवजीवन को पाते हैं।

११

अनुहूतः पुनरेहि, विद्वानुदयनं पथः।
आरोहणमाक्रमणं, जीवतो जीवतोऽयनम्

—अथर्व.

प्रत्येक प्राणी मात्र का कर्त्तव्य है यह
मार्ग सबका एक और गंतव्य है यह
सीढ़ी–दर–सीढ़ी सदा ऊपर चढ़ें हम
बस यही कर्त्तव्य है आगे बढ़ें हम
फिर हमें उत्साह से भर कर निहारें
ज़िन्दगी की ऊर्ध्व यात्राएं हमें प्रतिपल पुकारें।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि,
चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां
स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्

—ऋग्वेद

ऐश्वर्यशाली, हे प्रभो !
दो श्रेष्ठ धन धनवान हों
दक्ष हों हर कार्य में
बल दो हमें बलवान हों

दिन सुदिन हों आप वर दो
वाणी में माधुर्य भर दो

पुष्ट हों अक्षीण हों
हों स्वस्थ इक पहचान दो
ख्याति दो सुख्याति दो
सौभाग्य का वरदान दो

पञ्च नद्यः सरस्वतीम् अपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा, सो देशेऽभवत् सरित्।।

–यजु॰

सरस्वती –
सम स्रोत वाली
पाँच नदियों का मिलन है
और संगम–स्थल
नदी यह पांच में अभिव्यक्त होती।

विशेष : सरस्वती के स्रोत – पांच ज्ञान धाराएं और अभिव्यक्ति के माध्यम – चक्षु, रसना, श्रोत्र, नासिका, त्वचा

यं कुमार नवं रथम्, अचक्रं मनसाकृणोः।
एकेषं विश्वतः प्राञ्चम् अपश्यन्नधितिष्ठसि।।

—ऋग्वेद

आरूढ़ हो तुम
जिस नये रथ पर कुमार
तुम जिसे जी जान से करते हो प्यार
वह बिना पहियों के जो गतिमान है
देह रथ है और तू रथवान है

वह चतुर्दिक
एक मेरूदण्ड पर है घूमता
देख इस अद्वितीय रथ के आर पार
बन्द आँखों से न हो इस पर सवार

दिवं च रोह पृथिवीं च रोह,
राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह।
प्रजां च रोहामृतं च रोह,
रोहितेन तन्वं सं स्पृशस्व।।

—अथर्व॰

उन्नति
आध्यात्मिक, आधिभौतिक
शारीरिक और राष्ट्रीय उन्नति
आर्थिक स्तर पर भी उन्नति हो
उन्नति पर हो प्रजा तुम्हारी
मोक्ष प्राप्ति के उन्नति पथ पर
हे आत्मन !
संस्पर्श करो
निज आत्मा का परमात्म–सूर्य से।

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं,

जुष्टं जनाय दाशुषे।

देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसम्,

अग्निमीडे व्युष्टिषु।।

—ऋग्वेद

मैं स्तुति करता हूँ
दिव्यगुण सम्पन्न होने के लिये
सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापक
अग्नि परमेश्वर तुम्हारे —
श्रेष्ठ यौवन रूप से अभिभूत हूँ मैं
उषः कालों में ज्यादा दिपदिपाते
रूप के आतिथ्य हित आहूत हूँ मैं

वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सद्,

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।

तस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं

स ओत: प्रोतश्च विभू: प्रजासु।।

–यजु॰

मेधावी

अर्चनामयी

श्रवण–चिन्तनशील

इच्छा शक्ति से गतिशील

निश्चय देख लेता है

गुफा में निहित है जो पारब्रह्म

उस गुप्त को भी देख लेता है

जहाँ पर विश्व का यह घौंसला है

वह सदैव ओत प्रोत है प्रजाओं में

यह जगत –

उस ब्रह्म में समाविष्ट होता

फिर वहीं से प्रकट होता सर्वदा

ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं, गीर्भिः सखायमग्मियम्।
गां न दोहसे हुवे।।

—ऋग्वेद

वह ऋचाओं अर्चनाओं के सृजक साकार हैं
ज्ञान धाराओं के वाहक ज्ञान का भण्डार हैं
जिस तरह गौ को पुकारें दोहने हित सर्वदा
हम पुकारें आपको यह श्रेष्ठतम व्यवहार है

मा भेर्मा संविक्था अतमेरुर्यज्ञो,

ऽतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात्।

त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा।।

–यजु॰

हे आत्मन !

तू भयभीत न हो

मत होना तू पथ से विचलित

सब यज्ञ कर्म हों ग्लानि रहित

मैं त्रित में तुम्हें नियत करता

मैं दो के लिये नियत करता

तू एक मात्र में हो नियुक्त

प्रभु चरणों में कर यश अर्जित

विशेष : त्रित – ज्ञान, कर्म, उपासना
दो – इहलोक, परलोक
एक – एक परमेश्वर

कोऽदात् कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत् ते।।

—यजु॰

कौन देता है
किसी से कौन पाता है
सभी वशीभूत हो कर कामना के
दे रहे हैं
सभी वशीभूत हो कर कामना के
पा रहे हैं
समर्पित यह सभी कुछ कामनाओं के लिए है

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः, पवमानस्य शुष्मिणः।
चरन्ति विद्युतो दिवि।।

—यजु॰

पुण्य—पावन शक्तिमय
मैं नाद तेरा सुन रहा हूँ
सोम प्रभु रिमझिम बरसते सुन रहा हूँ
वृष्टियों में
ये चमकी बिजलियाँ
दिव्यता द्युतिमान गतिमय
इस हृदय—आकाश में विद्युत् समान

किमङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः
शिशीहि मा शिशयं त्वा शृणोमि।
अप्नस्वती मम धीरस्तु शक्र,
वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः।।

—ऋग्वेद

हे प्रभु, ऐश्वर्यशाली !
क्यों तुम्हें दानी कहें सब
क्योंकि तेरी सान पर चढ़ कर
सभी हैं तीक्ष्ण होते
तू हमें भी तीक्ष्ण कर दे
शक्तिशाली
हे प्रभू ! तू कर्म का व्यवहार दे
स्थायित्व और सम्पन्नता
ऐश्वर्य का भण्डार दे

यजस्व वीर प्रविहि मनायतो,

भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये।

हविष्कृणुष्व सुभगो यथासिसि,

ब्रह्मणस्पतेरव आ वृणीमहे।।

—ऋग्वेद

हम यजन करें
मन की गति सम द्रुतगामी
यदि शत्रु मन आक्रान्त करें
आक्रामक हो कर ऐ वीर सदा
उनकी गतिविधियाँ शान्त करें

प्रभु—रक्षा का हम करें वरण
फिर चूमेगा सौभाग्य चरण
पापी जन से भू भार हरें
मन—भद्र बनें उत्सर्ग करें
हम यजन करें

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं, चोभे श्रियमश्नुताम् !
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां, तस्यै ते स्वाहा।।

–यजु॰

राजा और धर्मात्मा करें श्रेय उत्पन्न
क्षात्र धर्म ब्राह्मण धर्म दोनों श्री सम्पन्न

स्वागत में हों सर्वदा वे प्रतिपल तैयार
उत्तम श्री–श्रेय को सदा पग–पग वन्दनवार

पावका नः सरस्वती,

वाजेभिर् वाजिनीवती।

यज्ञं वष्टु धियावसुः।।

—ऋग्वेद

सरस्वती, मां जगन्माता
पुनीत पावन बना रही है
बुद्धिमय सब कर्म—कौशल
आज हमको सिखा रही है

वेद माता !
अन्न धन बल वेग और विज्ञान दे कर
आप मेरे यज्ञ को सम्पूर्ण कर दें
और जीवन को मेरे परिपूर्ण कर दें

दोषो आगाद् बृहद् गाय, द्युमद् गामन्नाथर्वण।
स्तुहि देवं सवितारम्।।

—साम॰

हे अथर्व के पुत्र !
तमोमयी घोर निशा में
महागान की सरगम गाओ

सूर्य—सम
इन्द्र प्रभु की स्तुति में

तम से आच्छादित
द्यावापृथिवी पर दीप्तिमान
वह महागान गुंजायमान हो

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

—यजु॰

सुरभि बिखराता हुआ
यह कीर्तिपथ हो सर्वदा
सर्वव्यापक हे त्रिलोकी
यज्ञमय जीवन बना
शुद्ध निर्मल स्वस्थ तन मन
पुष्ट करना प्यार से
फिर हमें परिचित कराना
मोक्ष के संसार से
मुक्ति पथ पर मोक्ष पाना
लक्ष्य हो फिर उस तरह
शाख से चुपचाप
खरबूज़ा विलग हो जिस तरह

प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि मन्म,
भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु।
धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्ने,
इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन्।।

—ऋग्वेद

हे वन्दनीय !
मेरे आवाहन पर आप विराजें
मै स्तोत्र को प्रेरित करके
श्री चरणों में आत्मदान करता हूँ
मैं यह उत्तम श्रेष्ठ दान करता हूँ
हे सत्य सनातन राजन तुम
याज्ञिक को तपते मरूथल में
हो अमृत जल के प्याऊ जैसे
मेरे आवाहन स्वीकार करो

ससानात्याँ उत सूर्यं ससान,
इन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम्।
हिरण्ययमुत भोगं ससान;
हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत्।।

—ऋग्वेद

हे इन्द्र ! हमें ये अश्व दिये
और सूर्य देव को चमकाया
बहुभोज्य पदार्थ देती जो
उस गाय को भी प्रकट किया

सुवर्ण भोग सब दिये हमें
दस्युओं की करके हत्यायें
फिर आर्य जनों की रक्षा कर
तुम हरते जग की विपदायें

आरे अस्मद् अमतिम् आरे अंहः

आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि।

दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने,

यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति।।

—ऋग्वेद

हे बलयुक्त तेजस्वी प्रभुवर

क्योंकि तुम सबके हो रक्षक

हमसे दूर करो दुर्मति को

दूर करो इस पाप, अमति को

तिमिर पूर्ण इस गहन निशा में

शिव ही शिव हो दसहुँ दिशा में

तुम्हें प्राप्त कर हे परमेश्वर

सबका हो कल्याण महेश्वर

अश्वी रथी सुरूप इद्,
गोमाँ इदिन्द्र ते सखा।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा,
चन्द्रो याति सभामुप।

—ऋग्वेद

इन्द्र !
तुम्हारा मित्र सखा —
धन–अन्न, आयु का संवाहक
सोम्य समादृत
मित्र सभा में
चन्द्र किरण सा आह्लादक
प्रशस्त अश्व
प्राणों का स्वामी
सुन्दर रथ रथवान सुरूप
गो, इन्द्रिय, भूखण्डों वाला
स्वर्णिम किरणें रूप अनूप

यत्ते पवित्रमर्चिषि, अग्ने विततमन्तरा
ब्रह्म तेन पुनातु मा।।

–यजु॰

अग्नि में विस्तीर्ण
वह जो ज्योति में अन्तर्निहित है
ब्रह्म का वह तेज जिसमें सन्निहित है
ज्योतिमय उस रूप से पावन करो
हे प्रभु ! निज रूप से कल्मष हरो

अद्याद्या श्वः श्वः, इन्द्र त्रास्व परे च नः।
विश्वा च नो जरितृन्त्सत्पते अहा,
दिवा नक्तं च रक्षिषः

—ऋग्वेद

वर्तमान में
आज हमारी रक्षा कर
कल को भी संरक्षक होना हे प्रभुवर
परसों भी दुख दूर करो मम
ऐसे ही रह कर तत्पर
अहर्निश रक्षा में रह कर
प्रभु मेरे सब दुख दूर करें
विश्वपति हम स्तोताओं पर दया करें

सहस्रशीर्षा पुरुषः, सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं सर्वतः स्पृत्वा, अत्यतिष्ठद् दशाङगुलम्।।

–यजु॰

सहस्रों सिर
सहस्रों नेत्र
सहस्रों पांव हैं जिसके
इन्द्रियातीत है वह

वह पुरूष परमेश्वर
इस भूमि के प्रत्येक कण में
व्याप्त हो कर भी
सदा अव्यक्त है अग्राह्य है

को ददर्श प्रथमं जायमानम्

अस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति।

भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित्,

को विद्वांसमुपगात् प्रष्टुमेतत्।।

—ऋग्वेद

अदृश्य है वह

प्रथम जो उत्पन्न होता देह में

अस्थियों से रहित

जिसने अस्थिमय इस देह को धारण किया है

भूमि से

वह प्राण पाता

रक्त—मज्जा धमनियों वाला दिखाई दे रहा है।

कौन जाता है निकट विद्वान से यह पूछने

अदृश्य है जो आत्मा

वह आत्मा लेकिन कहाँ है।

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च,
वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः।
वैश्वानरो जायमानो न राजा,
अवातिरज्योतिषाग्निस्तमांसि।।

—ऋग्वेद

श्वेत श्याम सब दिन तेरे हैं
द्यावापृथिवी में गतिमान
सब घटनाओं का कारण बन
भ्रमण कर रहे है द्युतिमान

नृप समान हे सूर्य प्रकट हो
आत्म—अग्नि की ज्योति शिखा से
अन्धकार का कर सन्धान
ज्योतिर्मय कर ज्योति प्रदान

ब्रह्म प्रजावदाभर, जातवेदो विचर्षणे।
अग्ने यद् दीदयद् दिवि।।

—ऋग्वेद

अग्नि द्रष्टा
ज्ञान के उत्पत्ति कर्त्ता

ज्ञान संतति का हमें सम्मान देना
अध्यात्म का यह ज्ञान देना
हम तेरे प्रकाश में तल्लीन हों
मुक्त हो कर हम जहाँ लवलीन हों

ऊर्जा मित्रो वरूणः पिन्वतेडाः
पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्रः

—साम॰

इन्द्र प्रभु की दया दृष्टि से
वर्षा की अमृत बूंदो से
सूर्य रश्मियों की ऊष्मा से
अन्न पुष्ट और रसमय हों सब
हे प्रभुवर हम सब के हित में
पुष्ट करो सर्वान्न हमारे

भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम्।।

—साम॰

वह
महान अग्नि सदृश्य
अद्‌भुत स्वरूप ज्योतिर्मय
नभ मण्डल पर तेजस्वी सूरज जैसा
विद्यादि रत्नों का धारण कर्त्ता
वह है अनुपम निधियों का वर दाता

मा नः समस्य दूढ्य:, परि द्वेषसो अहंतिः।

ऊर्मिर्न नावमा वधीत्।।

—ऋग्वेद

नाव जर्जर

नष्ट होती है

लहर के वेग से

हे प्रभु !

यह जिन्दगी की नाव

सब दुश्चिन्तकों के द्वेष से

अक्षुण रहे।

न कीमिन्द्रो निकर्तवे, न शक्रः परिशक्तवे।
विश्वं शृणोति पश्यति।।

–ऋग्वेद

वह सुन रहा है
सब कहा और अनकहा

सर्वद्रष्टा को
दिखाई दे रहा यह दृश्यमान

कोई कर सकता नहीं
उस इन्द्र को हरगिज़ पराजित
शक्तिशाली वह अजेय है सर्वव्यापक

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः,

सरस्वती मन्युमन्तं जगाम।

विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः

सं दधातु बृहस्पतिः।।

—अथर्व॰

सरस्वती मां,
क्रुद्ध क्यों है
क्योंकि मुझ में छिद्र हैं

मन वाणी में है असंख्य छिद्र

ईश मेरे !
हे मेरे आचार्य !
अपने दिव्य गुण से
आज मेरे छिद्र भर दो

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

—ऋग्वेद

पवित्र कर्त्ता
सार्वभौमिक
सर्वत्र संचारी प्रभु
भयभीत को
निर्भय बना दो
दूर के और पास के
सब भय मिटा दो

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा
ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम्।
अव तां जहि हरसा जातवेदो
ऽबिभ्यदुग्रो ऽर्चिषा दिवमारोह सूर्य।।

—अथर्व०

इस अँधेरे को
मिटाने के लिए
तिमिरहर्त्ता सूर्य
स्वर्णिम रश्मियों के पंख ले कर
उदित होता है गगन में
सूर्योदय –
सूर्य की हिंसा
कभी जो सोचते हैं
सूर्य अपनी ज्योति से निस्तेज कर दे
फिर अभय, आकाश में हो ऊर्ध्वगामी

बृहदिन्द्राय गायत, मरुतो वृत्रहन्तमम्।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो, देवं देवाय जागृवि।।

—यजु॰

इस राष्ट्र को जगाओ
उत्कर्ष गीत गाओ
यह गीत सत्यवर्धक
हम राष्ट्र को सुनाएं
फिर आत्मोन्नति हित
हम ज्योति को जलायें

यह गीत वृत्रहन्ता
सब लोग गुनगुनाओ
पापी हैं, शत्रुओं का —
वध आज कर दिखाओ
इस राष्ट्र को जगाओ
उत्कर्ष गीत गाओ

विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं,
तुविदेष्णं तुवीमघम।
तुविमात्रम वोभि:।।

—ऋग्वेद

नाप तोल की
सीमाओं से बाहर हो तुम
निश्चय ही तुम बहु सुखदायक
हम तेरे संरक्षण में प्रभु
अगिनित कर्मों के संवाहक
तुझे अपरिमित धनी मानते
हे दाता हम तेरे याचक।

तवेदिन्द्राहमाशसा, हस्ते दात्रं चना ददे।
दिनस्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा,
पूर्धि यवस्य काशिना।।

—ऋग्वेद

मैं तेरे उपदेश वचन से
कर्म दराती ग्रहण कर रहा
मुझको देना मुठ्ठी भर–भर
ऐश्वर्यों के स्वामी ईश्वर !
खलिहानों में
कटे हुए एकत्रित जौ की

हिरण्मयेन पात्रेण, सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्।
ओ३म् खं ब्रह्म।।

—यजु॰

ढंका हुआ है
सत्य का मुख
सत्य का आवरण स्वर्णिम

सत्य पुरुष
आदित्य वर्ण
ओ३म् खं और ब्रह्म हूँ मैं

एको बहुनामसि मन्यवीडितो,
विशं विशं युधये संशिशाधि।
अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं,
द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे।।

—ऋग्वेद

राष्ट्राध्यक्ष, परमेश्वर
बहुत लोगों के जो स्तुति पात्र हैं
इस प्रजा को वे बनाएं युद्ध में रण बांकुरे
हे अखण्डित !
आप जो द्युतिमान हैं
आपके सहयोग से हम
युद्ध भूमि में –
तेजस्वी रूप हो कर
आपका जयघोष करते हैं
विजय की कामना से

अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशाः
अग्निर्ऋषिं यः सहस्रा सनोति।
अग्निर्दिवि हव्यमाततान,
अग्नेर्धामानि बिभृता पुरूत्रा।।

–ऋग्वेद

प्रभु–
वीरता की मूर्ति हैं जो
अग्नि–धन–बल के प्रदाता
सहस्रों ज्ञान दाता
अग्नि–ऋषियों के जनक
सर्वस्व ज्ञाता
आकाश में विस्तीर्ण करते हव्य
विस्तृत मेघ में जल और प्रतिफल
वह प्रभु सर्वत्र स्थित हैं
सब जगह स्थित आपके ही धाम हैं

तपोष्वग्ने अन्तराँ अमित्रान्,
तपा शंसमररुषः परस्य
तपो वसो चिकितानो अचित्तान्,
वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः

—ऋग्वेद

हे अग्नि !
अमित्रों को तप से संतप्त करो
फिर अन्तरमन को इन दुष्टों से मुक्त करो

कुछ नहीं दे रहे हैं किसी को
इनकी दुर्मति को नष्ट करो

हे आत्मन !
इस नीर क्षीर मेधावी बुद्धि के बल से
अज्ञान तिमिर को दूर करो
और अजर अमर गतिशील ज्ञान से
आलोकित भरपूर करो

य: प्रथम: कर्मकृत्याय जज्ञे,

यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम्।

येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं,

स नो मुञ्चत्वंहस:।।

—अथर्व

श्रेष्ठ आत्मा

जन्म लेता

देह पाकर

कर्म करने के लिए

श्रेष्ठ का

बल श्रेष्ठ

है सब को विदित

वज्र—प्रभुवर

पाप का विध्वंस कर दो

वज्रात्मा !

इस पाप से तुम मुक्त कर दो

योे नः स्वो अरणो, यश्च निष्ट्यो जिघांसति।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु, ब्रह्म वर्म ममान्तरम्।।

—ऋग्वेद

वह अपना
या कोई पराया
निष्कासित जो व्यक्ति सभा से

कभी हमारी
नैतिक हत्या को उद्यत हो
उस व्यक्ति को—
धूल चटा दें
हम अपने सब दिव्य गुणों से
अन्तरमन में
ब्रह्म, कवच हों !

भूरि नाम वन्दमानो दधाति,

पिता वसो यदि तज्जोषयासे।

कुविद् देवस्य सहसा चकानः,

सुम्नमग्निर् वनते वावृधानः।।

—ऋग्वेद

वन्दना में
यह जीवात्मा
कितने नामों को हृदयंगम कर
स्मरण नमन से धारण करता
हे परमेश्वर पिता
अगर तुम सच्चा स्मरण—नमन स्वीकारो
देव ! तुम्हारे बल वैभव से
जीव, कामना—युक्त
सदा आगे बढ़ते ही
पा जायें आनन्द बोध को

इयं मे नाभिरिह मे सधस्थम्,

इमे मे देवा अयमस्मि सर्वः।

द्विजा अह प्रथमजा ऋतस्य,

इदं धेनुरदुहज्जायमाना।।

—ऋग्वेद

यह मेरी नाभि
पृथ्वी से जुड़ा हुआ मैं
सर्व रूप मैं
मेरे हैं ये देव
सूर्य चन्द्र पर्जन्य अग्नि विद्वदगण
मेरे हैं ब्राह्मण
ब्रह्म ज्ञान देने वाले
विद्या रूपी
कामधेनु उत्पन्न हुई है
रस की धाराओं से

माहिर्भूर्मा पृदाकुर्नमस्त आतानानर्वा प्रेहि।
घृतस्य कुल्या उप ऋतस्य पथ्या अनु।।

—यजु॰

हे यशोमय !
सदगुणों की खान, हे विद्वान।
इस कुटिल पथ के
कभी मत सांप और अजगर बनो
श्रेष्ठतम जो है
उसे विस्तार दे आगे बढ़ो
ये नमन तेरे लिए हैं
दूसरों पर जो न आश्रित हो
अहिंसा के सदा पथ पर चले
सत्य की
पथनीतियों का
अनुसरण करते हुए
ऐश्वर्य और बल तेज की
नदियों का जो कर ले वरण

महाँ इन्द्रः परश्च नु, महित्वमस्तु वज्रिणे।
द्यौर्न प्रथिना शवः।।

—ऋग्वेद

ऐश्वर्यशाली—
इन्द्र महिमावान सर्वोत्कृष्ट है
वज्रधारी इन्द्र की जयकार है
द्युलोक में सर्वत्र यह विस्तार है
इन्द्र का बल और यश है छा रहा
इन्द्र महिमावान अपरम्पार है

मधु जनिषीय मधु वंशिषीय।
पयस्वानग्न आ गमं, तं मा संसृज वर्चसा।।

—अथर्व॰

मैं मधु का याचक
उत्पन्न करूं अतिशय मधु को
मैं आया हूँ रस तृप्त हुआ
मुझको प्रभुवर संयुक्त करो
तुम ओज तेज से युक्त करो

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य,

पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।

यो मा ददाति स इदेव मावद्

अहमन्नमन्नमदन्तमद्मि।।

—साम॰

मैं पारब्रह्म !
मैं सत्य नियम का प्रथम जनक
मैं पंचभूत—
इन, सूर्य, चन्द्र विद्युत,
अग्नि, विद्वान, इन्द्रिय का आदि देव
आनन्द रूप अमृत का नाभि—स्थल
मुझको पा कर
जो बांट रहे हैं जन—जन में
मेरी रक्षा में हैं प्रतिपल
मैं भक्तों का अन्न
जिसे पा कर आत्माएं तृप्त हुईं
मैं अन्न ग्रहण करने वालों का भक्षक हूँ

स्तुता मया वरदा वेदमाता,

प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।

आयुः प्राणं, प्रजां, पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।

मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकं।

—अथर्व॰

स्तुतिमयी, माँ—वेदमाता
जो हमें प्रेरित करे
नित्य पावन कर द्विजों को
जो सदा कल्मष हरे

आयु, प्राणं और प्रजा,
पशु, कीर्ति का वरदान दे
ब्रह्म का ऐश्वर्य दे
निज तेज का सम्मान दे

स्वयं स्थित माँ
स्थिर रहे निज लोक में
वह सहायक हो सदा
इस लोक में परलोक में

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति
कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति
कर्मणे वां वेषाय वाम्

—यजु॰

कौन करता है नियुक्त
किस लिये करता नियुक्त

प्रभुवर हमें करते नियुक्त
कर्त्तव्य पालन के लिए करते नियुक्त
स्त्रियो और भद्र पुरूषों !
कर्म करने के लिए
कर्म करने के लिये शुभ
और गुण विद्या से युक्त

नूनं तदिन्द्र दद्धि नो, यत् त्वा सुन्वन्त ईमहे।
रयिं नश्चित्रमा भरा स्वर्विदम्।।

—ऋग्वेद

ऐश्वर्यशाली इन्द्र !
हम जो मांगते हैं
भक्ति की जिस भावना से मांगते हैं

मोक्ष के
आनन्ददाता
हे प्रभु ऐश्वर्यदाता
आप अद्भुत और इच्छित
मोक्ष साधन रूप वह ऐश्वर्य देना

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो,
महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयाऽदन्
रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

—ऋग्वेद

हे प्रभू
तुम्हें हम क्या जानें
सीमित हैं अपनी क्षमतायें
अज्ञान रहित
है ज्ञात तुम्हें
इस मूढ़ मनुज की सीमायें
प्रकृति—युवती को
चार रहे,
हम किस दुनियां में खोये हैं
शासक हो कर
हम भोग भ्रमित
मोह निद्रा में क्यों खोये हैं

सदा गावः शुचयो विश्वधायसः।

सदा देवा अरेपसः॥

—साम॰

पवित्रकर्त्री
सूर्य किरणें, गो, ऋचायें
ये करें पोषण सदा
अमृतत्व से सिंचित करें
पौष्टिकता से हमें पूरित करें

देवजन को
वस्तुतः आदर्श तू अपना बना
देव सब निष्पाप होते सर्वदा

मिहः पावकाः प्रतता अभूवन्,
स्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् !
इन्द्र त्वम रथिरः पाहि नो रिषो,
मक्षू मक्षू कृणुहि गोजितो नः

—ऋग्वेद

पावनकर्त्री
रिमझिम वर्षा ऋतु
शान्त करे सीना धरती का
करती है कल्याण सभी का
मग्न हुई हैं दसहुँ दिशायें
इन्द्र प्रभु ! अब जमकर बरसो
मेघों के रथ पर आये हो
पूर्ण करो इस पावनता को
बाह्याभ्यन्तर
भूमि विजय हो, जय हो जय हो
कभी न हिंसा से पीड़ित हों
फैले विस्तृत साम्राज्य हमारा

सरस्वती माँ दीजिए ऐसा कुछ वरदान
अमृत के झरने झरें लोग करें रसपान

१.

कृपा दृष्टि माँ कीजिए तुम हो कृपा निधान
विद्या बुद्धि बल दीजिए मिट जाये अज्ञान

२.

मिट जाये मन की व्यथा दूर करो सब शोक
इस अँधियारी रात में फैलाओ आलोक

३.

मन झंकृत करने लगे वीणा के ये तार
कृपा दृष्टि से आपकी हो मेरा उद्धार

४.

श्रद्धा ज्ञान विवेक का अद्भुत है विस्तार
सब दैवी निधियाँ यहाँ अक्षय है भण्डार

५.

अद्भुत रचना आपकी पर्वत सागर शान्त
कौन इसे पढ़ पायेगा सचमुच आद्योपान्त

६.

कौन भेंट में दे गया ऋचा-मन्त्र और श्लोक
पूछ रही है रश्मियां मेरा रस्ता रोक

७.

कैसे मन को बाँधिये भाग रहा चहूँ ओर
पूजा के क्षण हो रहा भीतर कितना शोर

८.

जिसका कुछ आरम्भ है उसका होगा अन्त
दिग् दिगन्त तक आपकी शोभा सुनी अनन्त

९.

प्राण वायु दहका रहा सीने में इक आग
आहुतियां कुछ दीजिए चिर निद्रा से जाग

१०.

सब उलझन सुलझा गया जीवन उपसंहार
यत्र तत्र सर्वत्र है केवल अपरम्पार

११.

धन्यवाद निस दिन करें उसका बारम्बार
सूर्य भेंट जिसने किया दिन उज्जवल उपहार

१२.

धूप दीप नैवेद्य ले मन्दिर जायें आप
दसहूँ दिशा से लौट कर हम बैठे चुपचाप

१३.

एक पथिक विह्वल हुआ मन में ले कर प्यास
मंज़िल चल कर आ गई उस पंथी के पास

१४.

अहंकार की आग यह ज्यों ज्यों हुई प्रचण्ड
अंग अंग जलने लगा जिसने किया घमण्ड

१५.

हमने देखा एक सा आदि मध्य और अन्त
अनुभव कुछ ऐसा हुआ जीवन हुआ वसन्त

१६.

सब के सब ही पूज्य है पीपल शीशम नीम
शुद्ध करें पर्यावरण इनके लाभ असीम

१७.

मां दुविधा में हूं घिरा क्या मांगू वरदान
जैसी होनी चाहिये हो तेरी सन्तान

१८.

मैं ही दुविधा में रहा मेरे मन थी सोच
आमन्त्रण था आपका आओ निस्संकोच

१९.

मुझमें ऐसा कुछ नहीं जिसका हो सम्मान
मान करें जब लोग तो मैं समझूँ अपमान

२०.

तरकश खाली हो गया मुट्ठी में है जान
इस अन्तिम अध्याय का कब होगा अवसान

२१.

गर्व सदा जिस पर किया रंग रहा न रूप
जीवन सन्ध्या में ढ़ली चढ़ी उम्र की धूप

२२.

गफलत में ऐसे घिरे भूल गये घर बार
मृत्युलोक में ढूंढ़ते वे अपना आधार

२३.

यह आज्ञा प्रभु आपकी कौन सकेगा टाल
सब निश्चित है मृत्यु का, समय स्थान और काल

२४.

मेरे आंगन आ गई सब दीवारें फांद
रात चांदनी निष्कलुष ठगा रह गया चांद

२५.

अकस्मात् वह भेंट थी केवल इक संयोग
मन वैरागी हो गया जब से हुआ वियोग

२६.

कैसे हो इस राह पर मन आनन्द विभोर
एक दिशा में पग चलें मन चंचल चहूँ ओर

२७.

तुझे रिझाऊँ आज मैं कैसे दूँ आवाज़
सब सुर तेरे हाथ में तू है साज़ नवाज़

२८.

अन्त:स्थल अमृत भरा यह ईश्वर की गोद
जलनिधि पाने के लिए थोड़ा गहरा खोद

२९.

खुशियां पल दो पल मिली झूठा इनका साथ
संग सदा अपने रही कष्टों की बारात

३०.

सिर्फ़ सुनाई दे रही यह तेरी पदचाप
भेंट नही सम्भव हुई यह कैसा अभिशाप

३१.

हम धरती के लोग हैं क्या होंगे निर्दोष
पुरुषार्थ करते रहें और करें सन्तोष

३२.

उलट पलट करते रहें अग्नि शिखा पर आप
बस उतना ही सेंकिए जितना सह लें ताप

३३.

ऐसे तो मिट जायेगा यह जीवन अनमोल
ज़हरीले परिवेश में इतना विष मत घोल

३४.

कोई भी समझा नहीं क्या इस का है अन्त
विमुख हुए संसार से 'योगी' 'साधु' 'सन्त'

३५.

विस्मय में सब पड़ गये श्रद्धा ज्ञान विवेक
पलकें गीली कर गया खुशियों का अतिरेक

३६.

खुशबू पर पहरा हुए चन्दन वन के सांप
दृश्य सुहाने है मगर हृदय रहा है कांप

३७.

रजकण खुशबू दे रहे इस पथ पर ज्यों फूल
किन पाँवों नें छू लिया धन्य हुई यह धूल

३८.

एक सनातन सत्य है नित्य नया संसार
शाम हुई, बासी हुआ मैं दैनिक अखबार

३९.

ज्ञान और कर्मेन्द्रियां करें तपस्या पांच
सोना कंचन हो गया तेज़ हुई जो आंच

४०.

मुनिवर खा कर खुश हुए कन्द मूल और घास
हम वैभव ऐश्वर्य में भोग रहे सन्त्रास

४१.

किस सांचे में हम ढ़ले कैसा माँ का गर्भ
अपने से अनभिज्ञ हम खोज रहे सन्दर्भ

४२.

मन में जिज्ञासा लिये उत्कंठा से सीख
सब अर्जित करते इसे ज्ञान नहीं है भीख

४३.

शाखाओं पर झूमते कलियों के मुख बन्द
अलि गुंजन से खुल गये खूब लुटा मकरन्द

४४.

नीड़ विटप सब छोड़ कर पीपल और पलाश
मन पंछी उड़ने लगा छोटा है आकाश

४५.

यह मन तो है बांवरा कौन इसे समझाये
सुख बांटे सुख सौ गुणा दुख बांटे घट जाये

४६.

मायावी संसार में किसको इतना होश
अन्तिम दर है मौत का मरघट है खामोश

४७.

मेरा मन सन्तप्त है पग पग पर है पाप
मातृभूमि है भोगती क्यों ऐसा अभिशाप

४८.

ध्यान लगा कर मैं सुनुं यह तेरी आवाज
ढ़ोल मंजीरे बज रहे बिन गायक बिन साज़

४९.

पापों की गठरी लिये ढूंढ रहे घर घाट
प्रकृति का है अटल नियम जो बोया सो काट

५०.

अमृत का घट पी इसे मोती है सम्भाल
सागर मन मस्तिष्क है तू इसको खंगाल

५१.

इस अँधियारे कक्ष में मन की खिड़की खोल
मौसम के षड़यन्त्र की खुल जायेगी पोल

५२.

पुरूषार्थ गूंगा हुआ पंगु हो गये लेख
ईश्वर के इस न्याय को अन्तरमन से देख

५३.

मन से कुछ बातें करें यह मन तीरथ धाम
सावधान इतना रहें मन में हो विश्राम

५४.

हम भिखमंगे है यहाँ खाली है कशकोल
इस झूठे संसार में इतना सच मत बोल

५५.

आलोकित ब्रह्माण्ड में अद्‌भुत रूप अनूप
मै मिट्टी का दीप हूँ तुम हो ज्योति स्वरूप

५६.

पूर्ण पुरूष कोई नहीं, सब करते अभ्यास
उनको स्वामी जानिये जो दासों के दास

५७.

बर्फ पिघलती देख कर पर्वत है आक्रान्त
पीहर घर से आ रही नदिया का मन शान्त

५८.

इस मिट्टी से आपका कितना क्या सम्बन्ध
मातृभूमि छू कर कहो धरती की सौगन्ध

५९.

मैं भटका संसार में मिला मुझे संकेत
तू मेरा अभिप्राय है तू मेरा अभिप्रेत

६०.

किसने अधरों से छुआ दिया मुझे संगीत
पत्थर सा बेजान था मैं अनगाया गीत

६१.

मन शीशा दिल कांच है यह कैसा बर्ताव
चार दिशाओं से हुआ लगातार पथराव

६२.

भजन वन्दना में बजे शंख और घड़ियाल
पत्थर तो खामोश थे पण्डित जी वाचाल

६३.

जीवन पथ फिसलन भरा रखिये पाँव सँभाल
मंज़िल को पहचानिये धीमी रखिये चाल

६४.

मिल जुल रहिये प्रेम से मीठे बोलें बोल
घर दीवारें छत नही देश नहीं भूगोल

६५.

सबका साँई एक है उस पर रखिये टेक
धर्म सभी का एक है मज़हब हुए अनेक

६६.

कीचड़ में हो ज्यों जलज मन में था संन्यास
कुछ बीता कुछ शेष है यह जीवन वनवास

६७.

सब को खुशबू बांटता एक गुलाबी फूल
पत्ती पत्ती हो गया यह किसकी थी भूल

६८.

बच्चे आपस में लड़ें क्या होगा हे राम
देख अयोध्या में हुआ यह कैसा कुहराम

६९.

प्रतिपल हर घटना हमें देती है संकेत
यह जीवन छिन जायेगा ज्यों मुट्ठी से रेत

७०.

मन को जब विचलित करे जग की हाहाकार
अन्तस मन में हो रही आप सुने झंकार

७१.

बस केवल अन्तर यही इस पर दीजे ध्यान
आप समस्या हो गये हम हो गये निदान

७२.

यौवन की ऋतु आ गई, टूट रहे है पाश
सारा तन उपवन हुआ खिलने लगे पलाश

७३.

वह कितना निस्सीम है कितना अपरम्पार
मन्त्र मुग्ध जिसने किया यह सारा संसार

७४.

नन्हें-नन्हें दीप है इस तन की कन्दील
झिलमिल झिलमिल दो नयन जैसे गहरी झील

७५.

मुग्ध हुए श्रृंगार पर अपना रूप निहार
मिट्टी मिट्टी हो गया यह तन था निस्तार

७६.

काल कोठरी सा मिला यह तन कारावास
तोड़ूं कारागार मैं, नित्य करूं अभ्यास

७७.

इनका क्रय विक्रय नहीं देवी है ये बोल
ये दोहे पढ़ प्यार से सिक्कों में मत तोल

७८.

कोलाहल दिन भर हुआ लहरें थी उद्दाम
गंगा जी के घाट पर बैरागिन थी शाम

७८.

पूरब में सूरज उगे कर लेंगे अभिसार
सूर्यास्त गणिका करे शाम ढ़ले श्रृंगार

८०.

पूजन-अर्चन-वन्दना यह कैसा व्यापार
मन मन्दिर में झांकिये खुले हुए है द्वार

८१.

सागर में तूफान है सब कुछ है प्रतिकूल
बादबान जब खुल गये टूट गये मस्तूल

८२.

गूंज सुनाई दे रही यह कैसा संवाद
मन एकाकी हो जहां सुनिये अनहद नाद

८३.

नव ग्रह मेरे हाथ में मुठ्ठी में ब्राह्मण्ड
पण्डित जी यह छोड़िये झूठ और पाखण्ड

८४.

अलग अलग अनुभव सभी कुछ भी नही सटीक
गलत नही कुछ भी यहाँ और नहीं कुछ ठीक

८५.

नष्ट किये सब आयु के पावन कोरे पृष्ठ
वर्षों की गणना हुई हम हो गये वरिष्ठ

८६.

मन से अनुभव कीजिए सच्चाई की आंच
पांच मित्र है आपके दुश्मन भी हैं पांच

८७.

आशीषें हों शीष पर जैसे हो शिरस्त्राण
शुभ कर्मों से ही हुआ सम्भव यह कल्याण

८८.

युद्ध भूमि में कौन यह देखो लहू लुहान
झूठ, विजय रथ पर चढ़ा सत्य हुआ बलिदान

८९.

प्रश्न चिन्ह व्याकुल हुए बेचैनी के छन्द
पूछताछ की खिड़कियां सब की सब थीं बन्द

९०.

इक पतली सी डोर पर जीवन का यह नाच
ये सारे ग्रह नाचते तू भी उठ कर नाच

९१.

सिरहाना गीला हुआ रिमझिम थी बरसात
पल भर मैं सोया नहीं जागा सारी रात

९२.

इस बस्ती में आ गये कौन लोग उठ जाग
वैमनस्य का विष लिए विषधर काले नाग

९३.

मिथ्या यह संसार है सत्य मृत्यु आभास
जीवन भर बुझती नहीं क्यों जीने की प्यास

९४.

ईश्वर का आदेश है मन में हो आह्लाद
स्वप्न अगर संसार है फिर क्यों दुःख विषाद

९५.

बस केवल अनुभव किया अपनी पलकें मूंद
टप टप नयनों से गिरी अमृत की दो बूंद

९६.

मन का रथ गतिमान है कर्कश है यह शोर
पवन पराजित हो रहा अश्व सभी मुँहज़ोर

९७.

शुद्ध भाव से हम लिखें लेकर शब्द पुनीत
गो रस में धोया हुआ कोई पावन गीत

९८.

वर्तमान है देखता भूत भविष्यत् काल
प्रश्न चिन्ह जलते हुए रूप धरें विकराल

९९.

वैतरणी को पार कर जा पहुँचा उस छोर
तन की सुध बुध भूल कर मन आनन्द विभोर

१००.

पल भर भी रूकना नहीं सुनो भेद की बात
समय, सन्त, सरिता सदा चलते हैं दिन रात

१०१.

असंतुलित यदि हो गया टूट गये आधार
सत्व, रजोगुण, तामसी तीनों का विस्तार

१०२.

काव्य सृजन पावन विद्या इस पर हो अधिकार
विकृतियाँ दोहा बनें नहीं मुझे स्वीकार

१०३.

अस्ताचल में क्यों हुईं रो रो आँखे लाल
सूर्योदय पूरब दिशा उड़ने लगा गुलाल

१०४.

सरिता की लहरें यहाँ लेने लगीं अलाप
भजन वन्दना हो रही पवनें करती जाप

१०५.

गन्धी इस बाज़ार से गुज़रे हैं जो लोग
चाहे अनचाहे करें खुशबू का उपभोग

१०६.

पाखण्डी ऐसे गये सिर पर रख कर पाँव
अन्धकार से मुक्त है अब यह सारा गाँव

१०७.

सपनों का संसार यह क्यों इतना सुनसान
क्या यह गहरी नींद है अथवा है अज्ञान

१०८.

रंग रूप रस गन्ध का उत्सव है मधुमास
मन बैरागी ने लिया किस ऋतु में संन्यास

१०९.

भरे हुए है शून्य से खाली है जो कोष
शुभ चिन्तन से हो रहा मेरे मन सन्तोष

११०.

अनिवर्चनीय आनन्द में जागा सारी रात
मुझको इस एकान्त में कौन मिला अज्ञात

१११.

तर्कशील करते रहे नाहक वाद विवाद
रचना था प्रभु आपसे एक सुखद संवाद

११२.

पाप पुण्य से मुक्त अब करो मुझे निष्पाप
जन्म मरण के चक्र में भोग रहा संताप

११३.

विश्वासों के गांव में हृदय रहा है कांप
नित्य डराते हैं हमें सन्देहों के सांप

११४.

सारथी रण में हो रहा आज बहुत अपमान
रथ में है घोड़े जुते चरागाह में ध्यान

११५.

पथ आलोकित कर रहा देखो दिव्य प्रकाश
ज्योतिर्मय के देश में तम का हुआ विनाश

११६.

सहज सरल को मिल गये चकित हुए मतिमान
विस्मय में मुझको मिले ज्ञान और विज्ञान

११७.

दुर्गम पथ पर जब चले हुआ हमें यह बोध
नकारात्मक भाव हैं इस पथ के अवरोध

११८.

बुझे बुझे मन हैं सभी उजड़ा हुआ सुहाग
बिरहन बौराई पवन गाये राग विहाग

११९.

पुनः स्मरण में आ गई एक पुरानी बात
पहले हम कब थे मिले हमें बताओ तात !

१२०.

सूरज नें तीरथ किये किया न कुछ विश्राम
प्रातः काल से साँय तक देखे चारों धाम

१२१.

कविताएं पुल बन गईं मैं और तू के बीच
सरिता का तट आज भी लहरें रहा उलीच

१२२.

सृजन स्वयं होने लगा किया न कुछ सायास
मुझे पाठ्यक्रम है मिला पीड़ा का इतिहास

१२३.

चिता जला कर सेंकते मरघट में जो हाथ
अन्तिम यात्रा पर चले चला न कोई साथ

१२४.

धरती माँ की गोद में प्रमुदित मन में हर्ष
पुलकित इस मन को करे मिट्टी का संस्पर्श

१२५.

रात दबा कर चल रही नन्हें नन्हें पांव
रूनझुन रूनझुन हो रही यही हमारा गांव

१२६.

प्रतिपल गर्दिश में मिला यह कुम्हार का चाक
नित्य सृजन रत है प्रभो वाहिगुरू अल्लाह पाक

१२७.

इस जीवन संघर्ष में कोई नहीं बचाव
खींच-तान इतनी हुई टूटे सभी तनाव

१२८.

अनासक्त हो जाइये तजिये मन का शोक
हम मिट्टी के दीप हैं फैलायें आलोक

१२९.

दृढ़ चरित्र जो लोग है आँधी में चट्टान
मंज़िल हो जब सामने बन जायें तूफान

१३०.

छोड़ो तर्क-कुतर्क को प्यार न बिकता हाट
टहनी के मृदु फूल को ख़ंजर से मत काट

१३१.

सह कर अत्याचार को हृदय हुआ मजबूत
काँट छाँट से और भी फैलेगा शहतूत

१३२.

निपट पलायनवाद है कायर का सन्देश
व्यक्ति, स्थान वह छोड़ दो मन को जो दे क्लेश

१३३.

अनपढ़ता अज्ञानता मूरखता हर चीज़
जादू टोना आपका यह गण्डा तावीज़

१३४.

सब के मन को भा गये यह मीठे दो बोल
श्रद्धा के दो फूल है निस्संदेह अनमोल

१३५.

पूर्वाग्रह में ग्रस्त था यह सारा प्रतिपक्ष
पक्ष हमारे में खड़ा लेकिन आज विपक्ष

१३६.

अश्रुधार बहने लगी कारण था अज्ञात
इस नदिया में स्नान कर स्वच्छ हुआ मै रात

१३७.

किसे जगाऊँ आज मैं कौन रहा है जाग
आँख चुराते है सभी देख पराई आग

१३८.

दिव्य दृष्टि से हो रही पूर्ण सत्य की खोज
तपोनिष्ठ व्यक्तित्त्व के मुख मण्डल पर ओज

१३९.

हरे भरे वे लोग थे अब हैं केवल काठ
कौन पढ़ाता है उन्हें बर्बरता का पाठ

१४०.

मैं सकुचाया देख कर अपना यह सम्मान
महिमा मण्डित हो रहा यह मेरा अज्ञान

१४१.

अज्ञानी इस बात से कितना है अनजान
मन मन्दिर कालिख जमी उजला है परिधान

१४२.

पर हित में प्रतिदिन करें हम यह शिव संकल्प
सत्य, सत्य है, सत्य का कोई नहीं विकल्प

१४३.

यह जीवन उत्सव हुआ पा कर यह वरदान
हर्ष-शोक सम जब हुए मान और अपमान

१४४.

मिट्टी संग मिट्टी हुए जीवन था संघर्ष
टीस दबा कर वक्ष में खोज रहे है हर्ष

१४५.

कपट और विद्वेष का विष फैला सर्वांग
दुष्ट ग्रहों से है ग्रसित यह सारा पंचांग

१४६.

संशय में उलझे रहे गूंगे हुए सवाल
दो मुल्लाओं में हुई मुर्गी एक हलाल

१४७.

भस्म लगा धूनी रमा बैठा इक अवधूत
धूर्त स्वयं घोषित करे वह प्रभु का है दूत

१४८.

जिसकी कुर्बानी हुई उसकी करिये दीद
दुम्बे का सिर काट कर खूब मनाई ईद

१४९.

रिक्त पात्र सब भर गये रिमझिम बरसा रात
भरे हुए इस पात्र को कौन भरेगा तात

१५०.

नव सम्वत् प्रारम्भ कर भेजें शुभ सन्देश
सुन्दर हों सारे शकुन मिट जायें सब क्लेश

१५१.

गाँव उमड़ कर आ गया मेले में इस बार
वैशाखी के पर्व पर कर अपना श्रृंगार

१५२.

रंग जमा उत्सव हुए छिड़कें इत्र फुलेल
अदल बदल कर हो रहे षट् ऋतुओं के खेल

१५३.

गबरू नाचें भंगड़ा गिद्धे में मुटियार
फसलें पकती झूमती कटने को तैयार

१५४.

कृषक बलैयाँ ले रहे हो चश्में-बद्-दूर
मौसम बेईमान है आज नशे में चूर

१५५.

यह मुश्किल आसान कर बदलो मेरे लेख
बुरी नज़र से देखता दुष्ट महाजन देख

१५६.

क्रमशः ऋतुएं भेजता अपरम्पार अनन्त
खुशबू ले कर आ गया आंगन में हेमन्त

१५७.

वन उपवन सुरभित हुए पुष्पित फूल पराग
भँवरे गुन गुन गा रहे मधु ऋतु पावन फाग

१५८.

धूल धूसरित हो गया दम्भ और अभिमान
काम देव करने लगे मदन बाण सन्धान

१५९.

मन में उठी उमंग का दमन करें मत आप
मुखरित हो कर नाचिये सुन ढ़ोलक की थाप

१६०.

पवनों नें उत्सव किये खूब किया हुड़दंग
अंग अंग है नाचता मन में लिये तरंग

१६१.

रंग परस्पर प्यार के पिचकारी में डाल
होली के दिन हो गये चेहरे लाल गुलाल

१६२.

मेरे समकालीन है बस मेरा ही नाम
मै कविता को दे रहा नये नये आयाम

१९३.

कब मेरे घर आ गये वह अनन्त निस्सीम
असंमजस में देखते मुझको राम रहीम

१९४.

मैं उससे बिछुड़ा हुआ जिसका हूँ मैं अंश
समय मुझे क्यों दे रहा और विषैले दंश

१९५.

इस पंछी को देखिये कितने प्रिय है प्राण
तिनके तिनके से किया नीड़ एक निर्माण

१९६.

बिछुड़ी है किस डार से इक नन्ही सी कूंज
मुझे सुनाई दे रही बस मेरी अनुगूंज

१९७.

पर्वत पर आकाश नें पल पल बदले रूप
मैदानों में है बिछी सोने जैसी धूप

१९८.

इन पंखो में आ गई कैसे इतनी जान
मन पंछी की चोंच में तिनका हुआ वितान

१६९.

काल सदा पीछे रहा सारा जीवन काल
सम्मुख लेकिन आ गया अन्तिम क्षण तत्काल

१७०.

चिरपरिचित है आपके ये हैं अर्वाचीन
मातृ पितृ आचार्य के सब पर हैं ऋण तीन

१७१.

स्वयं समर्पित मै हुआ सुनता हूँ पदचाप
क्या पूजा क्या अर्चना कैसा तेरा जाप

१७२.

भेद नहीं हम पर खुला राज़ रहा बस राज़
मन्दिर गुरूद्वारे गये मस्जिद पढ़ी नमाज़

१७३.

ये घटनाएं है क्षणिक सब संयोग-वियोग
समय स्थान और काल हैं केवल इक संयोग

१७४.

गणतन्त्र दिवस आकाश में रंग बचे है तीन
लोक शक्ति के मन्त्र ने किया हमें स्वाधीन

१७५.

परहित में संलग्न हम त्याज्य हमें परद्रोह
पथ से विचलित न करे सत्ता का मद मोह

१७६.

राज्य नीति से कीजिए राजनीति का मन्त्र
समझो इस गुरुमन्त्र को सदा रहो स्वतन्त्र

१७७.

देश प्रेम यदि धर्म है सच्चा है अनुराग
सेंध लगी दीवार में जाग जाग उठ जाग

१७८.

नफरत को भड़का रहीं ये दीवारें नीच
रेखायें मत खींचिए मैं और तू के बीच

१७९.

सर्वनाश करने लगी जाग जाग उठ जाग
सीमा का अतिक्रमण कर यह चूल्हे की आग

१८०.

इस जीवन संघर्ष में मुझको यह सन्तोष
दुंदुभि रण में हो रही गूंज रहे जयघोष

१८१.

पाँवों में भटकन लिए इस युग में प्रत्येक
प्रश्न अनेकों मांगते उत्तर कोई एक

१८२.

संयम सुख का सूत्र है मूल मन्त्र स्वीकार
नदियाँ उच्छृंखल हुईं घर घर हाहाकार

१८३.

राग रंग खुशबू लिए यह जीवन अनुराग
ऋतुओं के संसर्ग से पुष्पित फूल पराग

१८४.

उसे आप क्या पायेंगे अपरम्पार अनन्त
स्वयं वही हो जाइये यही खोज का अन्त

१८५.

तप: पूत ऋषि ने किया वैदिक अनुसन्धान
कल्मष धोने के लिए ईश्वर का यह ज्ञान

१८६.

नित्य नया पथ खोजते ये मेरे दो नैन
असन्तुष्ट प्रतिपल रहें सदा रहें बेचैन

१८७.

नीति नियम उपदेश को एक कुएँ में डाल
स्वयं बुना है आपने यह मकड़ी का जाल

१८८.

आँखों में पानी नहीं सूख गई हर आस
घोर पतन के दौर में किस पर हो विश्वास

१८९.

प्रश्नों में उलझा रहा क्यों जीवन बेताल
मुक्त करो इस जीव को यह जी का जंजाल

१९०.

नये विशेषण दे रहा यह मेरा अज्ञान
गुणातीत प्रभु आप है फिर कैसा गुणगान

१९१.

अपना दुख सबसे बड़ा सुख से है अनुराग
सरिता का जल आज क्यों गाये राग विहाग

१९२.

मज़हबों में हम बँट गये, बँट गये राम रहीम
परिभाषित कैसे करें विस्तृत और असीम

१९३.

महा प्रलय जब-जब हुई कितना हुआ विनाश
पुनः पुनः निर्मित हुए यह धरती आकाश

१९४.

पीताम्बर धारण किये भोग रहे वनवास
दिवस तपस्वी तप करें सन्ध्यायें संन्यास

१९५.

पंछी सरल निरीह के पंख लिये हैं काट
फिर पिंजरे में बन्द कर रक्खा है इस हाट

१९६.

निंदा-स्तुति सम जानिये तजिये वाद विवाद
मिथ्या इस संसार में खुशियां और विषाद

१९७.

मेरे सिर पर कीजिए आशीषों की छांव
विपदाओं की धूप में मैं हूँ नंगे पांव

१९८.

रचना है प्रभु आपकी यह सारा संसार
आया था जो जीतने सब कुछ बैठा हार

१९९.

मै किस मिट्टी का बना ज्यों पत्थर पर लीक
सब तलवारें कांपती बीच खड़ा निर्भीक

२००.

इस रिमझिम बरसात में लगी हुई है आग
व्याकुल इस मन को करे यह कैसा अनुराग

२०१.

ऐसे तन कर मत चलो होगा काम तमाम
घुड़सवार इस वक्त की ढ़ीली करो लगाम

२०२.

बाहर से वे दो लगें हैं दोनों इक जान
रे मन खोजो एक को हो कर अन्तर ध्यान

२०३.

स्वागत में बाजे बजें पग पग तोरण द्वार
ऋजु-पथ पर हैं सर्वदा उत्सव और त्यौहार

२०४.

सारा तन भाषा हुआ रचिये कुछ संवाद
तन उपवन ऋतुराज है मन में है आह्लाद

२०५.

सन्नाटे के मन्त्र ने खोल दिये सब भेद
ये वाणी प्रभु आपकी मुखरित चारों वेद

२०६.

कोलाहल में खो गया भूल गया पहचान
मन सागर है बाँवरा सागर में तूफान

२०७.

मैंनें कब देखा उसे भूला हूँ पहचान
सूरज को जिसने दिया यह स्वर्णिम परिधान

२०८.

एक झलक ऐसी मिली खोया मन का चैन
अखियाँ पागल हो गईं जागी सारी रैन

२०९.

सदियों से जो बन्द हैं वे दरवाज़े खोल
पुरखों नें है जो दिया मिट्टी में मत रोल

२१०.

इस झूठे संसार की आदि काल से रीत
सार तत्व कुछ भी नही औ ढूंढे नवनीत

२११.

भिक्षा के है कायदे उस घर से तू सीख
बादशाह भी मांगते जिस दरवाज़े भीख

२१२.

धर्म-कर्म कर्त्तव्य में मत आने दो ढ़ील
एक व्यवस्था में बंधे ग्रह उपग्रह गतिशील

२१३.

सूरज है आकाश में ज्यों जलता अंगार
अन्तरिक्ष में जब उड़े पंख जले हर बार

२१४.

घर की दशा सुधारने भटके देश.विदेश
चिट्ठी पाती क्या लिखें क्या भेजें संदेश

२१५.

फिर अज़ादी के लिए लड़ें दूसरी जंग
आन्दोलित करने लगी मन में उठी तरंग

२१६.

पानी से वंचित हुए बादल सहमें खेत
मरूस्थल में है उड़ रही सिर से ऊपर रेत

२१७.

सांझ ढ़ले ढ़ल जायेंगे सब के सब गुमनाम
रिश्तों की इस धूप को कोई सा दो नाम

२१८.

मैं पानी से मांगता बस थोड़ी सी आग
सागर ठाठें मारता छोड़ रहा है झाग

२१९.

गर्दन पर विषधर लिये हृदय रहा है कांप
प्रतिपालक को काटता अहंकार का सांप

२२०.

अमर ज्योति जलती रहे प्रतिपल रहे प्रचण्ड
बलिदानों की यह प्रथा चलती रहे अखण्ड

२२१.

अँजुरि भर भर पीजिए करिये अमृतपान
पर्वत संन्यासी हुए निर्झर कृपा निधान

२२२.

कच्ची मिट्टी चाक पर ईश्वर देते चोट
चोट मुझे पहुँचा रहे, रहे न कोई खोट

२२३.

मन की एड़ी में चुभा क्यों तू हाल बिहाल
ले काँटे की नोक से काँटा एक निकाल

२२४.

सच्ची बातें कह गया निर्भय एक फकीर
सांप गुज़रने पर यहाँ पीटें आप लकीर

२२५.

लहू लहू चहुँ ओर है वसुधा के मन क्लेश
एक कबूतर ले उड़ा शान्ति-यज्ञ सन्देश

२२६.

धनवानों के शहर में सोच रहा हूँ आज
निर्धन निरअपराध पर क्यों गिरती है गाज

२२७.

मैं अधकचरे ज्ञान का भोग रहा संताप
एक अधूरा गीत हूँ पूर्ण कीजिए आप

२२८.

मन्त्र मुग्ध मैं हो गया आत्म-मिलन की रात
इस झोली में आ गई खुशियों की सौगात

२२९.

फिसलन है इस राह पर हाथों में ले हाथ
हाथ थाम कर मित्रवर सदा निभाओ साथ

२३०.

सिर्फ हताशा में कहा एकाकीपन श्राप
निपट अकेले बैठ कर फिर से सोचें आप

२३१.

विषय वस्तु से ही सदा मन में रखा द्रोह
सम्मोहित सब को करे स्वर्ण पात्र का मोह

२३२.

मिल कर गायें प्रेम से सब स्वर हों समवेत
हम उसकी सन्तान हैं श्वेत और अश्वेत

२३३.

स्वतः नहीं कुछ भी मिला बिना किसी पुरूषार्थ
इस तन्द्रा को छोड़ कर जाग जाग हे पार्थ

२३४.

समराँगण में मित्रवर उचित नहीं यह शोक
मन के इस आवेग को रोक सके तो रोक

२३५.

पाँच तत्व का है भवन प्रभुवर हो कल्याण
पांच शत्रु है देख कर काँप रहे है प्राण

२३६.

सच्चाई की राह में पग पग पर व्यवधान
मन में झंझावात है सागर में तूफान

२३७.

इक झटके में तोड़ दो ये सम्बन्ध अटूट
सुख दुख इस संसार के सब जायेंगे छूट

२३८.

दोनों का घर एक है दोनों को पहचान
मन में ही भगवान है मन में ही शैतान

२३९.

क्रोध बड़ा चाण्डाल है सहता नहीं विरोध
चिन्गारी ज्वाला हुई मन में था प्रतिशोध

२४०.

उपवन के आतिथ्य पर ऋतुएं है मगरूर
बाहें फैलाये पवन जैसे पंख मयूर

२४१.

रंग बिरंगे विश्व में अक्षर अक्षर खोज
शब्दों में खुशबू भरें कविताओं में ओज

२४२.

दृष्टिकोण मेरा सदा होता है समकोण
भावों का शोषण करें अपराधी गुरु दोण

२४३.

'सत्यमेव जयते' कहें, रखें भाव पुनीत
विजय सदा चूमे चरण समरांगण में जीत

२४४.

तर्क नहीं स्वीकृत हुए श्रद्धा के इस गाँव
मन अपराधी नें छूए पंचायत के पाँव

२४५.

वंचित जीवन से हुए पत्थर जड़ निर्जीव
जीवित रहने के लिए प्रतिपल मरें सजीव

२४६.

जीवन का यह मूल है जैसे फूल पराग
इस झूठे संसार के राग रंग में त्याग

२४७.

निकट सदा जिसके रहे पल प्रतिपल हर वक्त
अनासक्त उससे हुए मन से हुए विरक्त

२४८.

मुल्ला ने जब बांग दी मन्दिर बोलें शंख
अपने अपने नीड़ में पंछी खोलें पंख

२४९.

मैनें ऐसा क्या कहा तू क्यों है निस्तेज
अपना हिस्सा आप रख मेरा हिस्सा भेज

२५०.

पर निन्दा में खोजता प्रतिपल मन संतोष
मन चंचल मन बांवरा ढूंढ रहा है दोष

२५१.

सदा सर्वदा हो प्रभु नित्य प्रति उत्कर्ष
हम तेरे सानिध्य में जीयेंगे शत वर्ष

२५२.

सत्य न्याय की राह पर चलें सभी निःस्वार्थ
समृद्ध प्रभु के कोष से उत्तम मिलें पदार्थ

२५३.

पानी पर ऐसे चलूं बिना किसी व्यवधान
अन्तरिक्ष तक मैं उड़ूं पंख विहीन उड़ान

२५४.

अंकुश ले कर हाथ में वल्गायें लो थाम
अगर निरंकुश हो रहा भटकायेगा काम

२५५.

कागज़ की किश्ती मिली यह जल का है स्रोत
भव सागर में आपने छोड़ दिये जल पोत

२५६.

कापुरूषों से ही सदा भाग्य गया है रूठ
वर्तमान ही सत्य है भूत भविष्यत् झूठ

२५७.

इस अवसर पर मित्रवर कैसे गांऊ फाग
किश्ती मेरी काठ की नदिया में है आग

२५८.

वस्त्र गेरूआ जूट जटा जोगी जी का जोग
मलिन आत्मा के लिए ये मन के है रोग

२५९.

एक परिन्दा उड़ गया पिंजरे में था बन्द
मंगल उत्सव हो रहा मेरे मन आनन्द

२६०.

यह जीवन का है गणित समझा करे मुनीम
जमा घटाओ ज़िन्दगी और गुणा तकसीम

२६१.

सूखेगा झर जायेगा मिट जायेगी आब
एक सुगन्धित फूल है जीवन सुर्ख गुलाब

२६२.

कस्तूरी कुण्डल बसे भटके हिरण तमाम
हम भटके संसार में इस तीरथ उस धाम

२६३.

आकृतियाँ धूमिल हुईं धुँधलाये है दृश्य
तमस मिटे अन्तस जगे ज्योति कलश सदृश्य

२६४.

पूज रहे है लोग क्यों सोच हुआ हैरान
नर नारायण छोड़ कर पत्थर के भगवान

२६५.

पागलपन दीवानगी जिसने बांटा ज्ञान
घर से बेघर हो गया वह सच्चा इन्सान

२६६.

बन्धन हैं संसार के इस पथ के अवरोध
मन बैरागी हो गया हुआ उसे यह बोध

२६७.

श्रम की भट्ठी से निकल लौटी आज थकान
इन्तज़ार करती मिली देहरी पर मुस्कान

२६८.

अन्तरिक्ष पाताल में वह छाया चितचोर
घूम घूम कर देखती पृथ्वी चारों ओर

२६९.

इस जीवन संघर्ष में हुआ मुझे यह बोध
गहराया संकल्प जो दूर हुए अवरोध

२७०.

सत्य सनातन एक है कोई नहीं विकल्प
यज्ञ-अग्नि पावन जले पावन हों संकल्प

२७१.

इस उलझन से मुक्त है मेरा मन दरवेश
जूट जटा धारण करें मूंड मुंडायें केश

२७२.

मलयानिल के पंख पर ये खुशबू के छन्द
पग पग वन्दनवार थे मन में था आनन्द

२७३.

पुण्य भूमि फूले फले हो इसका उत्कर्ष
मानचित्र का मान हो प्यारा भारतवर्ष

२७४.

रात चांदनी दूधिया आँसू गई परोस
घर आंगन गीला हुआ पत्ती पत्ती ओस

२७५.

नाशवान संसार का आखिर होगा अन्त
अविनाशी प्रभु आप हैं केवल आप अनन्त

२७६.

दिन बैरागी हो गया सन्ध्या लहूलुहान
फिर से पश्चिम में हुआ सूरज का प्रस्थान

२७७.

एक साथ प्रतिपल किया सृजन और संहार
अद्भुत रचना आपकी यह सारा संसार

२७८.

यह मन संन्यासी हुआ देता सबको धीर
अमृत वर्षा हो रही इस तट पर उस तीर

२७९.

छल प्रपंच पाखण्ड का अहंकार का दम्भ
दुखद अन्त है एक सा चाहे जो आरम्भ

२८०.

सूरज का रथ हांकती सब किरणें अविराम
सम्मुख लेकिन आ गई तीतर पंखी शाम

२८१.

कर्म क्षेत्र को छोड़ कर बैठे है उपराम
शब्दों की सेना लड़े कैसे यह संग्राम

२८२.

सम्मोहन के जाल में उलझ गया सब ज्ञान
अर्जुन कुछ सुनता नही चिन्ता में भगवान

२८३.

छोड़ें तर्क-कुतर्क हम छोड़ें वाद विवाद
पुनः प्रेम से हम रचें आपस में संवाद

२८४.

सच का सूरज पी गया यह अँधियारी रात
विष का प्याला पी गये मीरां और सुकरात

२८५.

श्रद्धा ज्ञान विवेक हो मन में हो विश्वास
आत्माएं सब तृप्त हों बाकी रहे न प्यास

२८६.

मन वाणी और कर्म की आपस में तकरार
राम राज्य की कल्पना कैसे हो साकार

२८७.

कोई जब समझा नहीं इस मानस की पीर
मेरे नयनों से बहे झर झर अविरल नीर

२८८.

जीवन में अनुभव करें इस मृत्यु को आप
मोह ममता को छोड़िये मिट जायें सन्ताप

२८९.

भव सागर मे किश्तियां सागर में तूफ़ान
साहस चप्पु थाम लो धैर्य धर्म पहचान

२९०.

सूरज के दर्शन किये पृथ्वी हुई विभोर
घूंघट में रक्तिम हुई यह मदमाती भोर

जितना है संग्रह किया उतना हुआ विनाश
'उप्पल' जी ने क्या कहा सब हो गये उदास

देवी दास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट

भारतीय सभ्यता संस्कृति को समर्पित आध्यात्मिक चेतना की पुरोधा समाज सेवी संस्थाओं में अग्रणी देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना सन् 2000 ईस्वी में हुई। ये संस्थान धार्मिक एंव सामाजिक कार्य करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

संस्थान का उपक्रम :

- संस्थान में मानव मात्र के कल्याणार्थ अग्निहोत्र (हवन यज्ञ) की व्यवस्था।
- शारीरिक तौर से उत्तम स्वास्थय हेतू प्रतिदिन योग कक्षा की व्यवस्था।
- प्रतिदिन 1 घण्टा 30 मिन्ट के लिए सांयकालीन दैनिक सत्संग।
- होम्योपैथिक डिस्पैन्सरी की सुन्दर व्यवस्था।
- एक समृद्ध पुस्तकालय की व्यवस्था।
- समयानुकूल योग साधना एवं प्राणायाम चिकित्सा शिविर (वर्ष में 2 बार)।
- ध्यान योग शिविर की समुचित व्यवस्था ।
- विद्वान सन्यासियों के सानिध्य में कथा प्रवचन के विशेष आयोजन ।
- घरों में हवन यज्ञादि करवाने के लिए सुयोग्य पुरोहित की व्यवस्था।
- ग्रीष्मकालीन अवकाश के दिनों में 'चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन ।
- राष्ट्रीय पर्व, धार्मिक पर्व एवं सामाजिक पर्व भी आयोजित किये जाते हैं।

आशीर्वचन
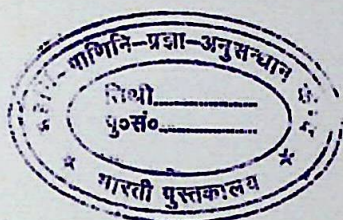
प्रिय सत्यप्रकाश का यह अद्‌भुत एवं अद्वितीय प्रयास जहाँ अत्यन्त सराहनीय है वहाँ यह प्रिय सत्यप्रकाश के व्यक्तित्त्व की उस उज्जवल छवि को उजागर करता है, जो उसे आध्यात्मिकता की गहराईयों में उतारती है। कोई तीन–चार वर्ष पूर्व जब इसकी हस्तलिखित पाण्डुलिपि मुझे प्राप्त हुई तो मैं आश्चर्य चकित रह गई कि किस संवेदना से वेद–मन्त्रों के अर्थों को इसने आत्मसात कर इन्हें शब्दों का बाना पहना कर कितना सरल सहज व मधुर कर दिया। यह प्रिय सत्यप्रकाश की वैदिक मान्यताओं व वेद के प्रति गहरी आस्था–निष्ठा व श्रद्धा का ही परिणाम हैं। यह तो स्पष्टतः नहीं कह सकती कि यह प्रतिभा इसे पूज्य मास्टर हरबंस लाल जी की विरासत से प्राप्त हुई है अथवा उस परमपिता की विशेष कृपा का फल है पर यह निश्चित है कि इसने कुल, समाज व हिन्दी साहित्त्य को गौरवान्वित किया है। परम पूज्य आदरणीय श्री केवल कृष्ण जी पुरी का वरद हस्त सदैव अज़ीज सत्यप्रकाश पर था व उनकी हार्दिक कामना थी कि यह पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र छपे व लोगों को इसे पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हो। पर चाहने पर भी यह उनके जीवन काल में सम्भव नहीं हो सका, जिसका खेद सदैव हृदय को बींधता रहेगा। प्रिय सत्यप्रकाश ने "सरे राह चलते–चलते" को भी अपने शब्द शैली व भाव देकर पूज्य भाई साहिब का एक सपना पूरा किया था और आज भी सत्यप्रकाश का यह प्रयास उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करेगा व उनका आशीर्वाद सदैव प्रिय सत्यप्रकाश के साथ रहेगा।

पूज्य भाई साहिब की पहली पुण्य तिथि के अवसर पर यह समर्पण उस उच्चात्मा को वह निर्मल एवं भाव भीनी श्रंद्धाजलि है, जिसकी अदृश्य डोर दो लोकों को जोड़ रही हैं।

अन्त में उस सर्वशक्तिमान प्रभु से यही कामना है कि प्रिय सत्यप्रकाश चिरंजीवी हो, माँ वेद की स्तुति में सदैव सलंग्न रहे, व अन्तः ज्ञान से इसे विभूषित करे। उन्नति के सोपान इसे ऊँचा ही ऊँचा ले जाएँ। यही हार्दिक कामना है।

शुभाशीर्वाद व मंगल कामनाओं के साथ :

–इंदु पुरी

8–जवाहर नगर, मोगा (पंजाब)
फोन 01636-222507, 222139

सत्यप्रकाश उप्पल

(14.08.1953)
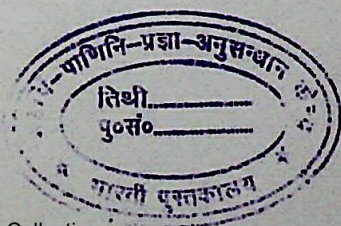
सम्प्रति : भारतीय स्टेट बैंक

स्थाई पता : 367, ब्लॉक – ए,

राजिन्दर ऐस्टेट, मोगा (पंजाब)

दूरभाष : 01636–228718 (निवास)

मोबायल : 98764–28718

प्रकाशित साहित्य

काव्य संग्रह :

रथ बदलो (1990)

लहू का एक मौसम (1994)

ग़ज़ल संग्रह :

आकाश घर नहीं है (2000)

अनुवाद :

टूटते हुए संस्कार (के. एल. गर्ग)

प्लैटफार्म नम्बर ग्यारह (बलदेव सिंह)

कल की बात (उर्दु)

(मा॰ हरबंस लाल भूषण की चुनिन्दा ग़ज़लें)

अनुसर्जना :

आत्मकथा : सरे राह चलते–चलते (केवल कृष्ण पुरी)

रचना प्रकाशन

वागर्थ, समकालीन भारतीय साहित्य, आजकल, भाषा, पंजाब सौरभ, जागृति, विपाशा, हरिगन्धा, धर्मयुग, पंजाब केसरी, दैनिक जागरण, दैनिक ट्रिब्यून, अजीत समाचार, अनौपचारिका, उद्‌गार, फनकार, लोकशासन, काव्या इत्यादि अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित ।

प्रसारण

आकाशवाणी जालन्धर, आकाशवाणी इलाहाबाद एवं दूरदर्शन से रचना प्रसारण

पुरस्कार एवं सम्मान

– पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में उपराष्ट्रपति श्री बी॰ डी॰ जत्ती द्वारा पुरस्कृत ।

– लहू का एक मौसम के लिए केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा घोषित राष्ट्रीय पुरस्कार (महामहिम राष्ट्रपति डा॰

– शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति भवन में मार्च 1997 में पुरस्कृत)

– संजय अनिता स्मृति प्रकाशन, भागलपुर (बिहार) द्वारा 'राष्ट्रीय शिखर साहित्य पुरस्कार' ।

– सहस्राब्दी विश्व हिन्दी सम्मेलन में राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्राब्दी सम्मान ।

– सरे राह चलते चलते के लिए श्रीमती लीलावती स्मृति पुरस्कार

– आर्य समाज, भारत विकास परिषद, भारतीय स्टेट बैंक एवं स्टेट बैंक आफ इण्डिया स्टाफ ऐसोसियेशन द्वारा विशेष सम्मान ।